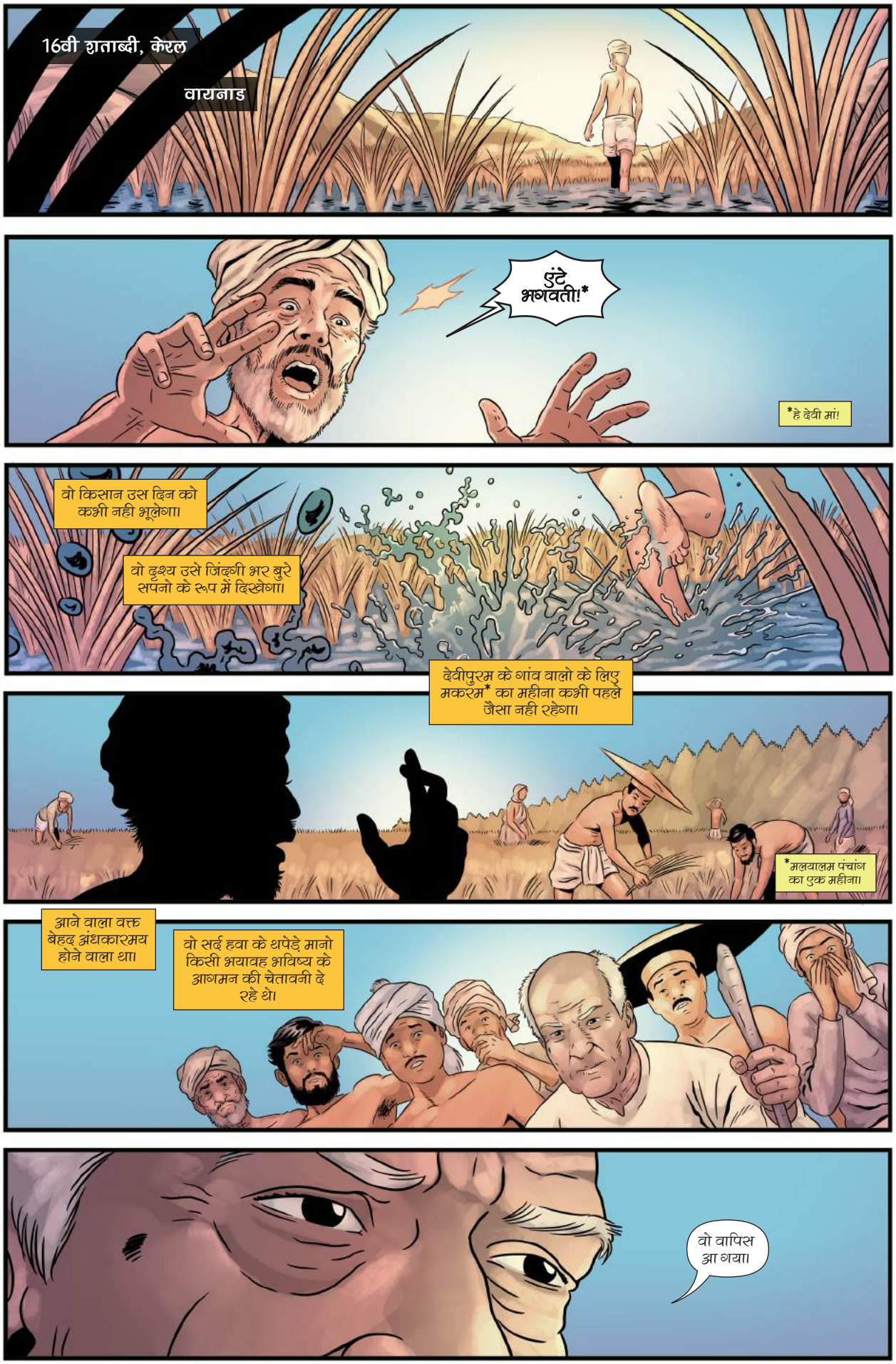
16वी शताब्दी, केरल
वायनाड
ओंटे भगवती!*
*हे देवी मां!
वो किसान उस दिन को कभी नही भूलेगा।
वो दृश्य उसे जिंदगी भर बुरे सपनो के रूप में दिखेगा।
देवीपुरम के गांव वालो के लिए मकरम* का महीना कभी पहले जैसा नही रहेगा।
*मलयालम पंचांग का एक महीना।
आने वाला वक्त बेहद अंधकारमय होने वाला था।
वो सर्द हवा के थपेड़े मानो किसी भयावह भविष्य के आगमन की चेतावनी दे रहे थे।
वो वापिस आ गया।

चेंबा वापिस आ गया है।

हमे मुक्कुठी पहाड़ियों की गुफा की ओर प्रस्थान करना चाहिए। केवल वो हमारी मदद कर सकती है।

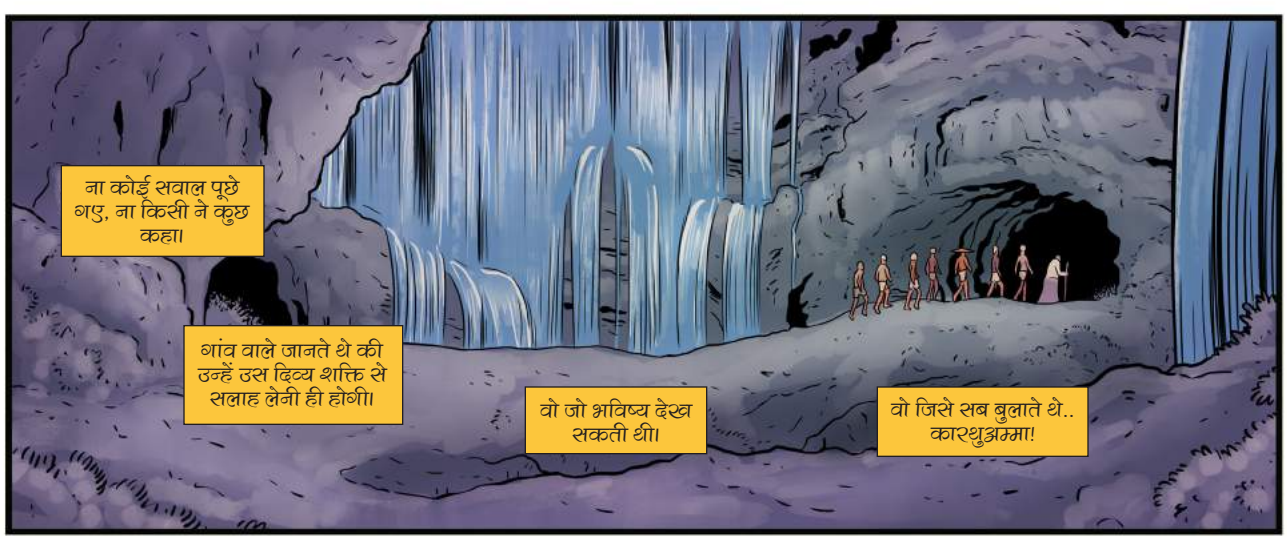
ना कोई सवाल पूछे गए, ना किसी ने कुछ कहा।
गांव वाले जानते थे की उन्हें उस दिव्य शक्ति से सलाह लेनी ही होगी।
वो जो भविष्य देख सकती थी।
वो जिसे सब बुलाते थे.. कारथुअम्मा!

आंधियां गवाही दे रही थी। बादलों की गर्जन उसके अलौकिक नृत्य के लिए संगीत का कार्य कर रही थी।
और जैसे ही संगीत अपने उत्कर्ष पर पहुंचा, उसका मदहोश जिस्म सूखे पत्ते के माफिक कांपने लगा और किसी अधेरी मृगतृष्णा समान दृश्य उसके सम्मुख दृष्टिगोचर होने लगे।
मर्द सदा ही उसके जिस्म को पाना चाहते थे ..
किंतु ये कहावत प्रचलित थी की जिसने भी आज तक कारथुअम्मा का स्पर्श करने की हिम्मत की, उसे साक्षात यमराज के समक्ष उपस्थित होना पड़ा।
वो नृत्य एक कर्णभेदी चीख के साथ समाप्त हुआय ये एक संकटमय भविष्य की चेतावनी थी।
देवी!
देवी!